सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

जपो जी नित्य राम राम श्री राम २।

अशरण शरण अघ दहन नाम में
मिलते शान्ति विश्राम ॥१॥

चिन्तन, ध्यान, जाप का करना,
गाना हरिगुण ग्राम।
सुरति शब्द संयोग रूप यह,
सहज योग है नाम ॥२॥

राम राममय नाद मधुरतम,
जब हो मिला विराम।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण,
सुधर गये सब काम ॥३॥

राम शब्द जब चले निरन्तर,
भीतर आठों याम।
सत्य समझिए फले मनोरथ,
मिला परम पद धाम ॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

मूल्य (Price) ₹ 5

नव वर्ष की शुभकामनाएँ

'श्री राम शरणम्'

8, रिंग रोड, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-110 024

श्री राम

[illegible]

HAPPY NEW year

श्री महाराज
जी,
आप को जय-जय राम
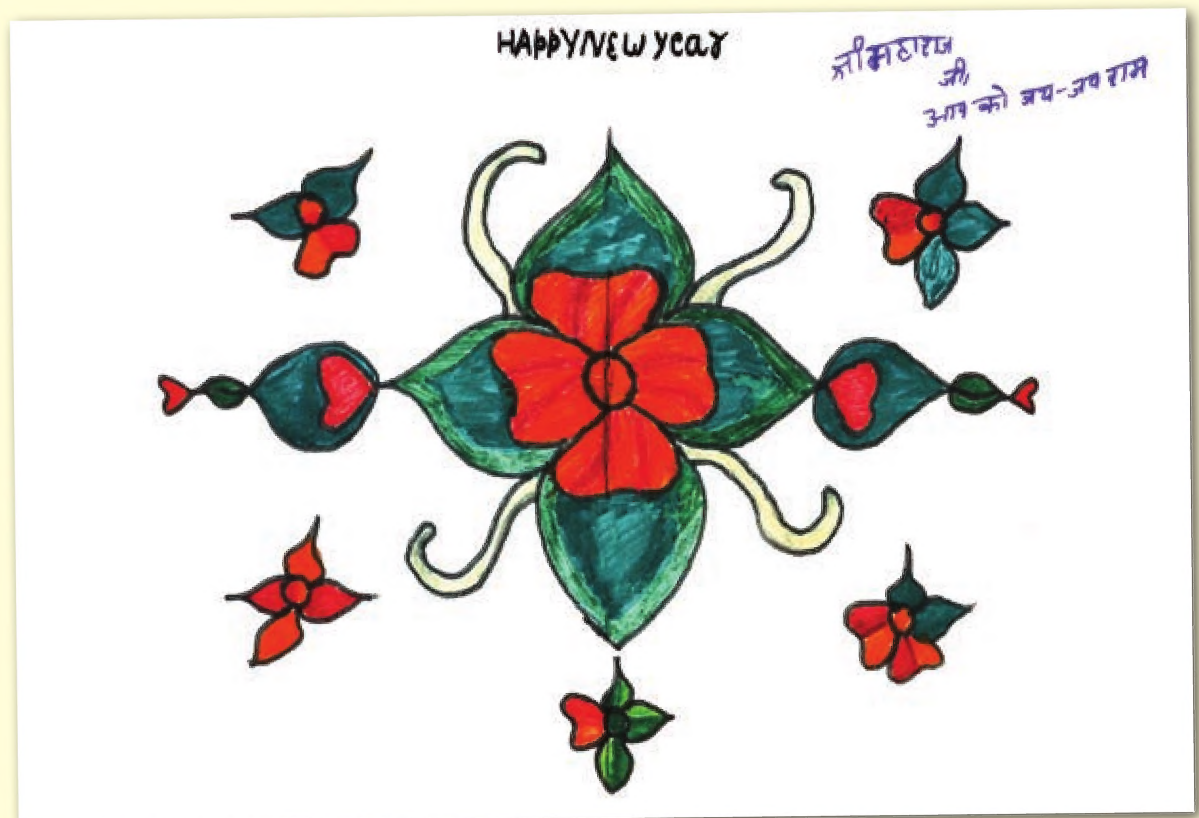
UNBOUNDED DEVOTION

सत्यानन्द

One who sings Bhajans at night, receives Saint's Grace. If a devotee is singing Ram-Dhun at night, 'The entire world on one side, my Ram alone on one side'*, ('सारी दुनिया इक पासे, मेरा राम अकेला इक पासे।') if someone in the Celestial Sphere hears, then the singer receives blessings. Even a moment of Saint's Grace is far more than a lifetime's spiritual attainment.

For a B.A. or M.A., examination you give maximum time. But not for worshipping Shree Ram. Use your ability to think. Prabhu Ram's Grace is not easy to obtain; it manifests only after enormous striving. Take to incessant ceaseless Sadhna. Sit for Dhyaan, with deep reverence. Meditate when it is peaceful all round. The sentiment should be noble. Devote maximum time for this when it is serene. Akhand Jap should also be done by the striving Sadhak. Unceasing Jap over a period of time is rewarded by spiritual experiences, so has been ordained. 'When there is Unbounded Devotion towards God, then salvation is imminent. Do not worry about death.' This is a Promise to the devotee, so says the Almighty. This maxim of the Lord has been established and trusted. Then, where is the scope for doubt in this?

An educated person is often not contented. Reason being, desires have increased manifold which are impossible to fulfil. Humans do not have conviction left. The religious sphere is also dynamic, unsteady. This is the reason why the Glories of God are not able to manifest. God does indeed rescue, but only when our devotion is unbounded, undistracted by any desire. When mind-intellect get immersed in the Almighty, the Sadhak experiences God's Proximity in his consciousness even while living in this subjective world. The bumble-bee comes from faraway forest and alights on the Lotus, but the frog living in the pool is unable to reach the Lotus.

Unbounded devotion is an elevated state. It comes after much spiritual practice. After arriving at God's Threshold, it does not behove one to go round knocking on other doors. Unbounded devotion is the highest form of Bhakti; it is Supreme. Unbounded devotion itself is Para-Vidya (Divine Knowledge). In Narad Bhakti Sutras, it is stated: 'There should be Supreme Love for God.' Sage Patanjali has said, 'Yajjapastadarthabhaavanam'. God who is propitiated again and again, starts showering His Grace on that Sadhak. All scriptures repeat this in one voice. Therefore, practice unbounded devotion. Salvation is assured. Study the characteristics of an unbounded devotee expounded in the Twelfth Chapter of the Gita. Learn by heart and assimilate them in your life. Then you shall reap the rewards.

(यह अंश मूलतः 'अनन्य भक्ति', प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 329-330 से अनुवादित है।)

राम नाम का आराधन

कोई कहे कि मुझे आराधन से शान्ति नहीं मिलती तो उसे टटोलना चाहिए कि त्रुटि कहाँ है, कौन सी ऐसी चीज़ है जिस तरफ मैं ज्यादा ध्यान देता हूँ। स्वभाव ऐसा बनाना चाहिए कि दुनियावी चिन्ता में ध्यान देने की बजाय आराधन में ध्यान लगे। जो सृष्टि को चलाता है उसी का ध्यान, उसी का आराधन करना चाहिए। पुरुषार्थ और करना चाहिए। राम का सहारा – विश्वास आवश्यक है। सब काम वही करता है। यह ख्याल होता है कि मैं करता हूँ। करता तो वही है। जब अपने आपको समर्पण कर देंगे तो वह स्वयं ही करता जाएगा।

यदि यह सोचे कि मेरी साधना में ऐसे विचार उठते हैं कि जो मैंने कभी सोचे भी नहीं तो यही सोचे कि मेरा काम राम नाम का आराधन है। पिछले संस्कार ढलते जाएँगे। भले ही कुछ टाईम लगेगा। जहाँ राम नाम की जोत जलती है कभी अन्धकार नहीं रह सकता। अपना समय दूसरों की नुक्ताचीनी में निकाल देते हैं उससे कोई लाभ नहीं। बाग में फूलों की बजाय काँटों को निहारता रहे तो मूर्खता है। इस सुन्दर भूमि का धन्यवाद करना चाहिए। उचित यही है कि अगर किसी का ध्यान आए तो उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु उस में अवगुण है, ठीक कर दो। या स्वयं ही कह दो, दूसरे को सीधा रास्ता दिखाना बुरी बात नहीं। जितना समय मिल सके दूसरों की सेवा करें। सब से अच्छी सेवा राम नाम का आराधन करो। सीधे मार्ग पर लाना, अगर कोई पीड़ित है तो उसके लिए आराधना करो तो लाभ होगा। विश्वास होना चाहिए।
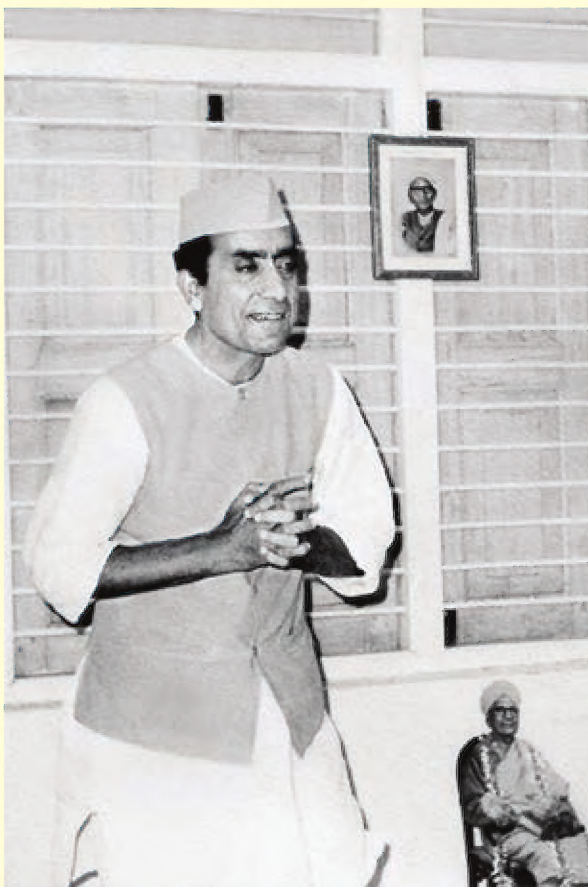
ज्योतिषियों से भी विश्वास तो मिलता है मगर कोई ठीक मार्ग पर चला सके तो। एक साधक मुँह देख कर कुछ बताते थे। वे विश्वास बढ़ाते थे और फिर पैसे कमाते थे। अगर डॉ. कहे कि यह दवाई लो तो रोगी अगर कहे कि आप पी लो तो मुझे आराम आ जाए। इसी प्रकार कोई कहे कि आप मेरे लिए भक्ति करो यह मूर्खता है। यह मंत्र महामंत्र है। कोई पूछे तो कि नाम से क्या मिला ? तो चिन्ता नहीं करनी चाहिए। गाड़ी में चलने वाला और जहाज़ में चलने वाले में अन्तर है। राम नाम का आराधन करने वाला किसी की चिन्ता नहीं करता। अपना काम राम नाम आराधन है। जितना कर सकेंगे उतनी ही जागृति होगी, भलाई होगी। एक दिन परम धाम प्राप्त होगा। महापुरुषों ने जीवित ही रह कर 'धाम' को प्राप्त कर लिया। अशरण शरण की भक्ति, उसके दरबार में प्रीति, अपना सफल जीवन जानिएगा।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुख से, साधना सत्संग हरिद्वार, 1 जुलाई 1966, अन्तिम बैठक। परम पूजनीय श्री महाराज जी की डायरी से)

पूजा कैसी और कैसे ?

भाग–2

एक बड़ा सुगम साधन है 'नाम की उपासना' जिस की महिमा संत महात्मा अनादि काल से गाते आ रहे हैं। नाम की उपासना, चाहे वह राम नाम हो, शिव नाम हो, या कृष्ण नाम हो। कोई नाम उत्कृष्ट या निकृष्ट नहीं, कोई बढ़िया या घटिया नहीं। जो यह मानता है कि राम नाम सर्वोत्कृष्ट है, शिव नाम सबसे निम्न है, तो संत महात्मा कहते हैं—उसे राम नाम से पूरा लाभ नहीं होगा। यह नाम के प्रति अपराध है। जो आप नित्य काम करते हैं, कर्तव्य निभाते हैं, चाहे पुत्र का है, पिता का है अथवा किसान, डाक्टर, कर्मचारी या दुकानदार का है, जो अपना कर्तव्य निभाता हुआ, मुख से राम राम हर वक्त जपता रहता है वह महात्मा ही जानने योग्य है, वह घर में बैठा हुआ ही संत है। यही है नाम की उपासना की महिमा। कहीं विशेष स्थान पर जा कर तपस्या करने की आवश्यकता नहीं। कुछ त्यागने की आवश्यकता नहीं। स्वामी जी महाराज कहते हैं बहुत काम करिएगा, परमेश्वर आपको वह पूंजी बहुत दे, लेकिन जितना काम वह कर रहे हो, उतना ही काम यह भी करो। दिन रात आप व्यापार करते हो, कीजिए। बहुत करें, लेकिन जितना सिक्के कमाने के लिये काम करते हो, उतना ही काम सच्ची कमाई के लिये भी करो। यही स्वामी जी की उपासना है। घर बैठे हुए माँ का कर्तव्य निभाएँ,

पत्नी का कर्तव्य निभाएँ, आप भी मोक्ष के उतने ही अधिकारी हैं, जितना एक पहाड़ों पर बैठा हुआ एकान्तवासी संत महात्मा।

दिन रात आप व्यापार करते हो, कीजिए। बहुत करें, लेकिन जितना सिक्के कमाने के लिये काम करते हो, उतना ही काम सच्ची कमाई के लिये भी करो। यही स्वामी जी की उपासना है।

बात आसान तो लगती है, मुख से राम राम करते रहना, पर इतनी आसान नहीं है। खाना खाने बैठते हैं तो राम राम भूल जाता है। पर, स्वामी जी कहते हैं, "यदि इसी वक्त आपके प्राण निकल जाएँ तो? अतः उस वक्त भी राम नाम जपो। कुछ भी आप कर रहे हों, करते रहिएगा, बस इतनी प्रार्थना है कि साथ में राम राम कहते जाएँ। कुछ भी खा रहे हैं, कुछ भी पी रहे हैं, राम राम बोलते रहें"। अपने मुख से स्वामी जी महाराज कुछ भी ऐसा मना नहीं करते। पर भीतर बैठा हुआ नाम, जो वह अन्दर स्थापित कर देते हैं दीक्षा के वक्त, वह कुरेदता है। रात को तो शराबी किसी ढंग से पी लेता है, पर दिन में शर्मिंदगी महसूस करता है। आम व्यक्ति तो महसूस नहीं करता। आम व्यक्ति तो गंदी नाली में गिरा हुआ कीड़ा है, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। पर जिस के अन्दर यह राम नाम स्थापित कर दिया गया है वह गलती महसूस करता है, आज फिर मैं हार गया, आज फिर मेरे से बड़ी भूल हो गई। बहुत देर तक आप पी नहीं पाओगे, भीतर बैठा हुआ राम यह छुड़ा कर रहेगा।

अब राम नाम जपें कैसे ? वह व्यवहारिक ढंग जिससे आपको बहुत जल्दी लाभ हो, बहुत लंबी उपासना करने की आवश्यकता न पड़े, सही ढंग से आप उपासना करेंगे तो आपको तत्काल लाभ होना आरम्भ होगा। छोटी छोटी बातें हैं याद रखने योग्य।

1. परमेश्वर के होकर उसका नाम जपिए, मुश्किल बात लग रही है समझने में ? कोई बात नहीं। अब तक तो आप अपने पति की हो कर नाम जपती हो, पति हो तो पत्नी के हो कर जपते हो, पुत्री हो तो माँ बाप की हो। संसारी हो तो संसार की हैं आप। संत महात्मा यहाँ बड़ा सूक्ष्म संकेत देते हैं। यदि लाभ जल्दी लेना है तो परमेश्वर के हो कर जपो। आप को पत्नी की पद्वी से नहीं हटा रहे, आप गृहिणी, पत्नी, माँ बनी रहेंगी। "परमात्मा मैं तो तेरा काम कर रहा हूँ जो तू करवा रहा है। तू ही माँ, पत्नी या पुत्री बनाने वाला है, अपनी मर्ज़ी से मैं कुछ नहीं बनी, न ही कोई बन सकती हूँ। तेरा दिया हुआ कर्तव्य निभा रही हूँ। नाता तो मेरा तेरे साथ ही है"। इसको कहेंगे परमात्मा के हो कर जपना, इस भाव को याद रखिएगा। देखो न, जिन से सम्बन्ध जोड़े हुए हैं, सब से वियोग निश्चित है, हो कर रहेगा, कोई रोक नहीं सकता। संसार के साथ वियोग नित्य है और परमेश्वर के साथ संयोग नित्य है। मूर्खता, अज्ञानता बस इतनी ही है जिनके साथ अनित्य संबन्ध है, टूट जाने वाला है, उन से हम शाश्वत की अपेक्षा रखते हैं। यहीं हम मार खाते हैं। जो स्वयं नश्वर है वह आपको सदा रहने वाला सुख कहाँ से दे सकेगा ? कभी नहीं हो सकेगा, आप लाख जन्म और ले लें। कभी आपको अनश्वर सुख, कभी नष्ट न होने वाला सुख नहीं दे सकेंगे। यह तो common sense ही है इसीलिए सम्बन्ध परमेश्वर के साथ, कर्तव्य इन के प्रति। इसको कहेंगे परमेश्वर का हो कर जप करना। अभी तो नाम उसका जपते हैं, याद संसार को करते हैं। क्यों ? हम हैं ही संसार के। भगवान कहते हैं, "तुम मेरे से पूरा लाभ लेना चाहते हो, जल्द लाभ लेना चाहते हो तो मेरे हो के नाम जपो"।

2. धन कमाते हो। जिस धन की यहाँ चर्चा चल रही है, उस धन के सामने, यह धन बड़ी तुच्छ चीज़, बड़ी कमीनी, बड़ी छोटी चीज़ है। उसे आप सम्भाल कर बैंक में रखते हैं, तिजोरी में रखते हैं, अपनी पत्नी को भी पूरा भेद नहीं देते कि हमारे पास कितना है। संत महात्मा कहते हैं जब ये गंदी तुच्छ चीज़ को गुप्त रखते हो तो इस पूंजी को भी जितना गुप्त रखोगे उतना लाभ होगा। संसार से सम्भाल कर रखें। एक उदाहरण, प्रह्लाद ने इस पूंजी को गुप्त नहीं रखा, उसे कितनी यातनाएँ सहनी पड़ीं। गुप्त रखने का अर्थ

है, प्रदर्शन नहीं करना, भक्ति इसलिए नहीं करनी कि अपने आपको भक्त कहलवाना है। भक्ति इसलिए करनी है, ताकि मेरा राम रीझे।

3. नित्य निरन्तर करिएगा, दोनों शब्द याद रखिएगा आप घर खाना बनाती हैं, आजकल तो प्रेशर कुकर हैं, जल्दी बन जाता है। यदि चूल्हे पर रखें कोई दाल, फिर उतार ली। दो घंटे बाद फिर दस मिनट के लिए रखी, फिर उतार ली इस प्रकार करते–करते रात को आप को खाने को दाल मिली। यही दाल आप लगातार अग्नि पर धैर्य से पकाते तो आधे पौने घंटे में तैयार हो जाती है, इसी को कहते हैं नित्य निरन्तर नाम की उपासना। आज कर ली, छः महीने बाद फिर कर ली, इससे काम नहीं बनेगा। अंतिम बात ऐसा नहीं सोचना कि यह नहीं की जा सकती। परमेश्वर की भक्ति करो। यह अपने आप में सम्पूर्ण है, हमें और कुछ नहीं करना। जिन्हें विश्वास नहीं उन्हें ही धूप, बत्ती, पानी आदि की आवश्यकता। जिनको विश्वास है कि नाम की उपासना जैसा वेद कहता है, शास्त्र कहता है कि सर्वोच्च है, यदि यह न मान कर दूसरों के पास जाते हैं तो उसको नाम पर विश्वास नहीं। यह सम्पूर्ण उपासना है।

> परमेश्वर की भक्ति करो। यह अपने आप में सम्पूर्ण है, हमें और कुछ नहीं करना।... यह सम्पूर्ण उपासना है।

4. हर गृहस्थ संकट से घिरा रहता है, कभी घाटा पड़ गया, आज आमदनी कम है, दो तीन लड़कियाँ हैं, कोई पुत्र नहीं है, पुत्र नालायक निकल आया इत्यादि। मानो ऐसी अनेक चीज़ें हमारे गृहस्थ जीवन में आती हैं। नाम की उपासना इन घाटों को पूरा करने के लिए नहीं करनी। परमेश्वर को यह घाटे पूरा करने में कुछ नहीं लगता, कर देता है। लेकिन आप ने जो कमाई करी, व्यापार करके खो दी। व्यापार नहीं करना, कामना सहित नाम की उपासना नहीं करनी। मेरे पति का व्यापार ठीक हो जाए, पुत्र आ जाए । इन चीज़ों को अपनी दृष्टि में रख कर उपासना करोगे तो तुरन्त लाभ नहीं होता। चार बातें कहीं गई हैं यदि ध्यान में रखोगे तो अविलम्ब लाभ होगा, आप पर नाम का रंग चढ़ेगा। आप परख कर देखें, आप को राम नाम मीठा लगने लग जाएगा, इससे आप का मन नहीं उकताएगा। लेकिन अब रस आने लगेगा।

इन चार बातों का ध्यान रख के नाम जपा है, तो नाम से तो मन उकताएगा नहीं। और अधिक जाप करने को मन करेगा। नित्य निरन्तर जाप करने को मन करेगा। यदि यह सम्भव हो गया तो काम बन गया। आपके उद्धार को आपके कल्याण को स्वामी जी महाराज कहते हैं, "कोई रोक नहीं पायेगा"। इतनी ऊँची है इस नाम की महिमा ! नाम प्रेम पूर्वक जपें, परमेश्वर के हो कर जपें, इसे सम्भाल कर रखें, प्रदर्शन के लिए नहीं जपें, कामना रहित हो कर जपें और सदा जपते रहें, जब तक इस शरीर में जीवन है।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के इस लेख का पहला भाग 'सत्य साहित्य', अक्तूबर 2017 में प्रकाशित हुआ।)

पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के दोहे

सदा रहे सेवा विनय, मान बड़ाई त्याग ।
राम नाम का काम हो, राम भक्ति अनुराग ।।

हरिद्वार 25.07.1959

बार बार नमस्कार तुझे, धरणी पर सिर टेक ।
राम राम श्री राम जी, इष्ट देव हैं एक ।।

हरिद्वार 25.04.1956

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

Question: Maharajji, I am unable to control my thoughts and actions. This bothers me. Please can you tell me what my purpose in this world is? Please advise me

[illegible]

प्रश्न : महाराज जी, मेरा अपने विचारों और कर्म पर काबू नही है। यह बात मुझे परेशान करती है। क्या आप मुझ बता सकते हैं कि दुनिया में मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? कृपया मार्गदर्शन करें।

पूजनीय महाराज जी : सप्रेम जय जय राम ! यह सत्य है कि जब वर्षों से बन्द कमरे में झाड़ू लगाया जाता है तो बहुत धूल उड़ती है। इस प्रकार, विचार भी तंग करते हैं परन्तु अन्ततः शान्त हो जाते हैं। मन को शान्त और पवित्र करने के लिए जाप और ध्यान करते रहिए।

जीवन का उद्देश्य ईमानदारी से काम करना है ताकि कमाए गए पैसे का इस्तेमाल परिवार और परिजनों के लिए कर सकें और पिछले जन्म के कर्ज़ों को समाप्त कर सकें। त्यागें, त्यागें, त्यागें ! अपने अतीत को भूल जाएँ। भविष्य की चिन्ता किए बगैर सिर्फ वर्तमान में रहें क्योंकि आपका भविष्य आपके वर्तमान पर ही निर्भर करता है।

कर्म अनिवार्य है। हाथ देने के लिए हैं न कि भीख माँगने के लिए। राम नाम की कृपा बनी रहे और आपको ऐसा करने का भरपूर बल मिले। मन, वचन और कर्म की पवित्रता को प्राप्त करने की हर सम्भव कोशिश करनी चाहिए। वहाँ आप सभी को सप्रेम जय जय राम!

(परम पूजनीय श्री महाराज जी से ये सभी प्रश्न एक साधक ने पूछे थे।)

THE STORY OF DHRUV

Once upon a long there was an emperor by the name of Uttanpad who ruled over a vast and powerful empire. His subjects were happy and the kingdom was prosperous. Like many other kings, Uttanpad had a large family. He had two wives named Queen Suruchi and Queen Suniti. They both had one son each: Queen Suruchi's son was named Uttam and Queen Suniti's son was Dhruv. Of the two wives, the King favoured Suruchi and her son Uttam.

One day when young Dhruv went to the palace to visit his father, he saw Uttam sitting on his father's lap. Since he loved his father dearly, Dhruv too wanted to gain his affection. He ran and tried to sit beside his brother. Seeing this Queen Suruchi was very angry and jealous. She shouted loudly at Dhruv: "You are not worthy of sitting on the King's lap. That is the place of my son. The son of Queen Suniti can not have such a place. Leave the joys of the palace and go and seek God. You do not have any place in the palace.'

Shocked and deeply hurt at his step-mother's rude words and unfair attitude, Dhruv started to weep bitterly. Unable to tolerate the pain he ran out of the palace hall to seek his own mother. Queen Suniti hugged the young child and tried hard to console her son. 'Mother, I do not wish to stay at home anymore. I will seek God and leave all worldly desires. There is nothing left for me here. I will seek only one refuge - that of the Almighty!,' he wept to his mother. Upon hearing her dear son Queen Suniti guided him to seek God's Grace which, she explained is unsurpassed in the whole world and above all worldly things.

Dhruv now left the luxury of the royal palace and went to the deep forests to meditate in search of the Almighty. On the way he met Sage Narada who, upon seeing such a young boy, was worried about how he would manage alone in the dense forests. "You are just a small child and the forest is full of dangerous animals. How will you bear the winter's cold and summer heat? Go back home," he advised Dhruv. However, Dhruv was determined to search for God and replied: "Oh Saint! even at the cost of my life and in the face of all the rigours of the forest, I will prove myself worthy to sit in the lap of the King, by undergoing great penance and pleasing God." Sage Narada tried hard to persuade Dhruv to return to the comforts of the palace but was unable to convince him. Dhruv's intense devotion and strong determination pleased Sage Narada Muni who now taught him how to practice penance and taught him the mantras.

Dhruv stood on one leg and started praying lovingly to God. So absorbed did he become in his penance that the difficulties of forest life did not affect him at all. He had only one goal – to please and meet God. Many months passed like this.

Finally Dhruv's prayers were answered. Lord Vishnu who was delighted with his devotion appeared before Dhruv : 'I am pleased with your devotion, my child. Tell me, what do you wish?,' the Lord asked the young boy. 'Oh God! I wish for your blessings and to spread love all across,' Dhruv replied.'All your wishes shall be fulfilled my child,' promised Lord Vishnu. Soon after this He disappeared.

Dhruv had achieved his goal. Not only had he pleased God but he had even met Him. Dhruv decided that it was now time to return home. As he reached the palace, the King welcomed him fondly. Full honours and respect were given to him upon arrival.

Even Queen Suruchi, his step mother, regretted her behaviour towards Dhruv and now hugged and welcomed him home. Her son also welcomed him. Dhruv became everybody's favourite. A few years later, he was crowned Emperor of the kingdom and he served people with love and dedication.

Till today Dhruv is remembered by everyone for his strong determination. God graced him with eternal status in the heavens. Even today we know him as the Dhruv (immovable) star, the Pole (North) star. We can still see Dhruv every night shining in the sky. If you have not yet seen him, you must do so tonight!

(Drawn from 'Bhakti Prakash', pp. 351-353.)

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अक्तूबर से दिसम्बर 2017

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **सिडनी**, आस्ट्रेलिया में 30 सितम्बर व 1 अक्तूबर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 4 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बा**, फीज़ी में 3 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 9 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नाडी**, फीज़ी में 4 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 30 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश में 5 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 529 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मेरीलैंड**, अमेरिका में 7 अक्तूबर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 5 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूवा**, फीज़ी में 8 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 10 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू** में 13 से 15 अक्तूबर तक तीन दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 242 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **लाबासा**, फीज़ी में 20 अक्तूबर एक दिवसीय सत्संग लगा जिसमें 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमृतसर**, पंजाब में 22 अक्तूबर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 95 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार**, हरियाणा में 28 एवं 29 अक्तूबर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 21 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- चंडीगढ़ में 29 अक्तूबर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 91 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पठानकोट**, पंजाब में 4 एवं 5 नवम्बर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 191 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागौद**, मध्यप्रदेश मे 9 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 873 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला पंजाब में 18 व 19 नवम्बर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 41 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 24 से 27 नवम्बर तक तीन रात्री साधना सत्संग लगा जिसमें 313 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ**, जम्मू व कश्मीर में 3 दिसम्बर को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 97 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **उज्जैन**, मध्यप्रदेश में 3 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 355 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सरदारशहर**, राजस्थान में 5 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 142 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **होशंगाबाद**, मध्यप्रदेश में 8 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 367 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्री रामशरणम् में अक्तूबर एवं दिसम्बर में साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भिवानी**, हरियाणा में 9 व 10 दिसम्बर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत**, गुजरात में 16 व 17 दिसम्बर को दो दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 279 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 23 व 24 दिसम्बर को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें 24 दिसम्बर को नाम दीक्षा हुई।
- **देवास**, मध्य प्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।
- **लुधियाना** में 31 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया, जिसमें सत्संग के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।
- **दाहोद**, गुजरात में 31 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमें सत्संग के उपरान्त नाम दीक्षा हुई।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 31 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें नाम दीक्षा हुई।

निर्माणधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- आदिवासी गांव **बांसगहन (अब्दुल्लागंज)** नज़दीक भोपाल, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र आरम्भ होने की आशा है। ■

अनुभूति

I am an Australian and I am not of Indian origin. I have recently attended a Satsang at Shree Ram Sharnam at Sydney.

The experience of spending two days at the Satsang was profound to both me and my husband. We were very grateful to be involved and learned a great deal. This experience deepened our understanding of this faith and the role of Guru and the Grace he provides. We now chant 'Ram Naam' on each day. My husband chants while cycling to and from work and me throughout the day as opportunity allows. We listen together to recorded chanting prior to retiring for the night. Our lives flow better and the stress of day to day demands is more manageable. I have also introduced the 'Ram Naam' to my students. My husband also had a divine vision from Param Pujniya Shree Prem ji Maharaj.

Sadhna Satsang (January to December 2018)

Indore	12 to 15 January	Friday to Monday
Hansi	2 to 5 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Tuesday to Friday
Haridwar	27 March to 1 April	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 June to 3 July	Saturday to Tuesday
Haridwar	22 to 27 July	Sunday to Friday
Haridwar	30 Sept. to 3rd Oct.	Sunday to Wednesday
Haridwar (Ramayani)	10 to 19 October	Wednesday to Friday
Haridwar	11 to 14 November	Sunday to Wednesday
Gwalior	23 to 26 November	Friday to Monday

Open Satsang (January to December 2018)

Jhabua	7 to 9 January	Sunday to Tuesday
Pilibanga	27 to 28 January	Saturday to Sunday
Bilaspur	23 to 25 Feburary	Friday to Sunday
Rattangarh	26 to 27 Feb	Monday to Tuesday
Delhi (Holi)	28 Feb to 2 March	Wednesday to Friday
Jhabua Maun Sadhana	17 to 26 March	Saturday to Monday
Mandi	01-Apr	Sunday
Jawali	14-Apr	Saturday
Bhareri	15-Apr	Sunday
Alampur	18-Apr	Wednesday
Manali	14 to 16 June	Thursday to Saturday
U.S.A.	28 to 30 June	Thursday to Saturday
Delhi	28 to 29 July	Saturday to Sunday
Rohtak	11 to 12 August	Saturday to Sunday
Rewari	15 to 16 September	Saturday to Sunday
Jammu	21 to 23 September	Friday to Sunday
Sydney	29 to 30 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	5 to 7 October	Friday to Sunday
Hisar	20 to 21 October	Saturday to Sunday
Pathankot	3 to 4 November	Saturday to Sunday
Kapurthala	17 to 18 November	Saturday to Sunday
Bhiwani	8 to 9 December	Saturday to Sunday
Surat	15 to 16 December	Saturday to Sunday
Sujanpur	29 to 30 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (January to December 2018)

21	January	Sunday	11.00 AM
18	February	Sunday	11.00 AM
18	March	Sunday	11.00 AM
15	April	Sunday	10:30 AM
27	May	Sunday	10:30 AM
27	July	Friday	4 .00 PM
26	August	Sunday	10:30 AM
23	September	Sunday	10:30 AM
21	October	Sunday	10:30 AM
11	November	Sunday	11.00 AM
30	December	Sunday	11.00 AM

Naam Deeksha in Other Centres (January to December 2018)

01-Jan	Monday	Petlawad
02-Jan	Tuesday	Thaandla
03-Jan	Wednesday	Banswara(Rajasthan)
04-Jan	Thursday	Anjana(Rajasthan)
05-Jan	Friday	Kushalgarh(Rajasthan)
06-Jan	Saturday	Bolasa(MP)
07-Jan	Sunday	Jhabua
12-Jan	Friday	Indore
21-Jan	Sunday	Itarsi
28-Jan	Sunday	Pilibanga
10-Feb	Saturday	Naamroop (Assam)
11-Feb	Sunday	Tinsukia(Assam)
22-Feb	Thursday	Bansgahan(MP)
25-Feb	Sunday	Bilaspur(HP)
27-Feb	Tuesday	Rattangarh(Rajasthan)
11-Mar	Sunday	Ahmedabad
01-Apr	Sunday	Mandi(HP)
14-Apr	Saturday	Jawali(HP)
15-Apr	Sunday	Bhareri(HP)
18-Apr	Wednesday	Alampur(HP)
27-May	Sunday	Chambhi(HP)
09-Jun	Saturday	Kishatwar(J&K)
10-Jun	Sunday	Bhadarwah(J& K)
16-Jun	Saturday	Manali (HP)
30-June	Saturday	USA
12-Aug	Sunday	Rohtak
16-Sep	Sunday	Rewari
23-Sep	Sunday	Jammu
30-Sep	Sunday	Sydney
07-Oct	Sunday	Gurdaspur
21-Oct	Sunday	Hisar
04-Nov	Sunday	Pathankot
18-Nov	Sunday	Kapurthala
09-Dec	Sunday	Bhiwani
11-Dec	Tuesday	Bhopal
16-Dec	Sunday	Surat
25-Dec	Tuesday	Dewas
30-Dec	Sunday	Sujanpur

Purnima (January to December 2018)

2	January	Tuesday
31	January	Wednesday
1	March	Thursday
31	March	Saturday
30	April	Monday
29	May	Tuesday
28	June	Thursday
27	July	Friday
26	August	Sunday
25	September	Tuesday
24	October	Wednesday
23	November	Friday
22	December	Saturday

‘सत्य साहित्य’ के उद्देश्य और नियम

उद्देश्य

1. ‘सत्य साहित्य’ का मुख्य उद्देश्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के लोक कल्याणकारी साहित्य का व्याख्यात्मक शैली से प्रकाशन करना है।
2. ‘सत्य साहित्य’ का दूसरा उद्देश्य है उस साधना पद्धति का प्रचार और प्रसार करना जो सच्ची और सरल है, वेद शास्त्र सम्मत है और भावुक साधकों के अनुभव में आ चुकी है।

नियम

1. ‘सत्य साहित्य’ हर तीन माह में प्रकाशित होगा।
2. ‘सत्य साहित्य’ में परम पूज्य स्वामी श्री सत्यानंद जी महाराज, परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूज्य महाराज जी के प्रकाशित व अप्रकाशित साहित्य से सम्बन्धित विचार प्रकाशित होंगे।
3. ‘सत्य साहित्य’ के ‘अनुभूतियाँ’ विभाग में गुरुजनों के सम्पर्क या परिचय में आए हुए साधकों के अपने अनुभव प्रकाशित होंगे।
4. ‘सत्य साहित्य’ के ‘पत्र और उत्तर’ विभाग में साधकों के पत्र और उनके उत्तर उनके पत्रों के आधार पर प्रकाशित होंगे।
5. ‘सत्य साहित्य’ में गुरुजनों के साहित्य और सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखने वाली कविताएँ, गीत आदि भी प्रकाशित हो सकेंगे।
6. ‘सत्य साहित्य’ में प्रकाशनार्थ आई हुई सामग्री को शीघ्र या विलम्ब से प्रकाशित करना श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट्, नई दिल्ली, के अधीन होगा।
7. आवश्यकतानुसार नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन हो सकेगा, किन्तु ध्येय वही रहेगा जो इन नियमों से प्रकट है। ■

यदि आप ‘सत्य साहित्य’ की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924